Chhatrapati Shahu Ji Maharaj
University, Kanpur

Answer Script Details
Barcode 11447601

Roll No. 23261028043
Total Mark 58/75.00

Exam BA_V_ODD_EXAM_NOV_2025
Subject A050503T - Social and Economic History of Medieval Inc

Question wise Mark Summary

Q.No	Mark	Q.No	Mark	Q.No	Mark	Q.No	Mark
1A	4/5						
1B	4/5						
1C	4/5						
1D	4/5						
1E	4/5						
1F	4/5						
1G	4/5						
1H	4/5						
1I	4/5						
2	11/15						
3	0/15						
4	0/15						
5	0/15						
6	0/15						
7	11/15						
8	0/15						
9	0/15						

Date of Exam: 21/11/25 Shift: III Room No.: 22
Paper Code: A050503T Subject: History Year/Sem: 5th
Name of Candidate: Devansh Pandey
Roll No.: 2 3 2 6 1 0 2 8 0 4 3

Signature of Candidate: Devansh Pandey.
Signature of Invigilator
COE Facsimile

Chhatrapati Shahu Ji Maharaj University
Kanpur, Uttar Pradesh

PART-II

MARKS OBTAINED

Q.	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
(a)										
(b)										
(c)										
(d)										
(e)										
(f)										
(g)										
(h)										
(i)										
(j)										
Total										

Total Marks in Figures — Max. Marks
Total Marks in Words

A 0 5 0 5 0 3 T
Paper Code

Signature of Evaluator

Course: Social and Economic History of Med. India
Session: 2025-26 Year/Semester: 5th sem
Subject: History

Paper Code: A 0 5 0 5 0 3 T
Exam Date: 2 1 1 1 2 0 2 5
Name of Candidate: D E V A N S H P A N D E Y
Father's Name: S A T Y A P R A K A S H P A N D E Y

महाविद्यालय का कोड / College Code: K N 0 4
परीक्षा केन्द्र का कोड / Exam Centre Code: K N 0 4

परीक्षा का प्रकार / Type of Exam
संस्थागत Regular ● भूतपूर्व छात्र Ex. Student ○
व्यक्तिगत Private ○ बैक पेपर परीक्षा Back paper Exam ○

ANSWER BOOKLET NO.
11447601

A 0 5 0 5 0 3 T
Paper Code

नामांकन संख्या / Enrollment Number: C S J M A 2 3 0 0 0 1 0 4 5 1 7

परीक्षार्थी अनुक्रमांक संख्या Candidate's Roll Number: 2 3 2 6 1 0 2 8 0 4 3

पेपर कोड Paper Code: A 0 5 0 5 0 3 T

Signature of Candidate: Devansh Pandey.
Signature of Invigilator
C.S Facsimile
COE Facsimile

नोट : 1. परीक्षार्थी को निर्देशित किया जाता है कि आवरण पन्ने के पृष्ठ भाग पर अंकित सभी निर्देशों को सावधानी पूर्वक पढ़ें।
2. गोलों में भरी जाने वाली प्रविष्टियाँ बायीं तरफ से शुरू की जायें। 3. गोलों को काले या नीले बॉलपेन से भरा जाये।

INSTRUCTIONS TO THE CANDIDATE FOR FILLING PART-I

1. Read the instructions carefully given on the answer script and admit card.
2. Write Date of Exam, Shift, Paper Code & Name of Subject Correctly.
3. Write Name & Roll No. Correctly.
4. Write Semester & Branch Correctly.

INSTRUCTIONS TO THE CANDIDATE FOR FILLING PART-III

1. Use blue or black ball point pen for writing alphabets & numerals in ☐ Boxes.
2. Carefully study the example before you start marking.
3. As shown in the example below blacken the circles completely.

4. Make no Stray marks on this sheet.
5. **DO NOT WRITE OR MARK ON THE BAR CODE.**

IN ORDER TO AVOID UFM (UNFAIR MEANS) :

1. The Roll No. and Answer Book no. found elsewhere or any other symbol found in the answer book will be treated as unfair means.
2. Any tempering of Bar Code and Booklet no shall be treated as Unfair Means.
3. Do Not bring the materials like slip of paper/mobile/digital diaries/ study material/ revision notes in examination hall. Possession of the mobiles/ digital diaries/ electronic watch and any other electronic gadget except memory less scientific calculator shall be considered as UFM case.
4. Do not keep or paste currency note in answer script it shall be consider as UFM.

अनुचित साधन से बचने हेतु:

1. उत्तर पुस्तिका के निर्दिष्ट स्थान को छोड़कर अनुक्रमांक एवं उत्तरपुस्तिका का क्रमांक कहीं और न लिखे तथा कोई भी चिन्ह न बनायें क्योंकि यह अनुचित साधन प्रयोग की परिधि में आता है।
2. उत्तर पुस्तिका के बारकोड अथवा उत्तर पुस्तिका संख्या पर छेड़ करने पर अनुचित साधन प्रयोग माना जायेगा।
3. परीक्षा कक्ष में निम्न वस्तुएं साथ न लाये, जैसे लिखे हुए कागज के टुकड़े, मोबाईल, डिजिटल डायरी, कॉपी, पुस्तक यह सभी वस्तुएं जो अनुचित साधन के अन्तर्गत आती है। केवल संबंधित प्रश्नपत्र में ही मेमोरी लैस साइंटफिक कैल्कुलेटर ले जाने की अनुमन्यता होगी।
4. उत्तर पुस्तिकाओं में रूपये न रखें न ही उत्तर पुस्तिका में चिपकायें। ऐसा करना अनुचित साधन प्रयोग की परिधि में आता है।

परीक्षार्थी के लिए निर्देश

1. प्रवेश पत्र एवं उत्तर पुस्तिका पर दिये गये निर्देशों को ध्यान से पढ़ें।
2. कवर पृष्ठ के दूसरी तरफ कुछ न लिखें।
3. उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों पर दोनों तरफ लिखें।
4. प्रश्न पत्र पर अपने अनुक्रमांक के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
5. प्रश्न पत्र कोड एवं प्रश्न पत्र कोड सावधानी पूर्वक लिखें।
6. अपनी स्थिति स्पष्ट लिखें।
7. उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों की संख्या देखें। अगर उत्तर पुस्तिका में पृ (1–24) से कम है या फटे हुए है, तो परीक्षा शुरू होने के पूर्व दूसरी उ पुस्तिका ले लें।
8. प्रश्नपत्र को देख, यदि प्रश्नपत्र के विषय कोड, विषय का नाम तथा प्र में कोई त्रुटि है तो उसके परीक्षा शुरू होने के 30 मिनट के अन्दर निरीक्षक को तत्काल सूचित करें, उसके बाद विश्वविद्यालय द्वारा क कार्यवाही नहीं की जायेगी।
9. प्रश्नों के उत्तर लिखने के लिये पैंसिल का प्रयोग न करें।
10. B कॉपी या अतिरिक्त ग्राफ नहीं दिया जायेगा।

INSTRUCTIONS TO THE CANDIDATE

1. Read the instructions carefully given on the Question Pap Admit Card & Answer Script.
2. Do not write anything on back side of the cover page.
3. Write on both sides of pages of answer book.
4. Do not write anything on question paper except Roll Number.
5. Write Paper Code & Question Paper Id carefully.
6. CHECK the number of pages (1-32) or any other kind of dama in your answer script, if found than change the answer sc immediately before the commencement of examination.
7. CHECK the Question Paper for any kind of discrepancy e Subject Code, Subject Name and Question of the Quest Paper during first THIRTY MINUTES of the commencement the exam, so that it can be corrected in TIME. After that corrections shall be entertained by the university.
8. Do not use pencil for answering the question.
9. Write status correctly e.g. those appearing in carry over pap should fill in status as Carry Over. Those appearing as Students should fill in status as ex.
10. No supplementary answer book & graph paper will be provided

INSTRUCTIONS TO THE CANDIDATE FOR FILLING PART-IV

1. Use blue or black ball point pen for writing alphabets & numeral in ☐ Boxes.
2. Use blue or black ball point pen for filling the circles.

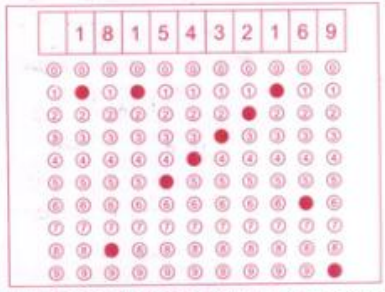

Note - If your Roll No. is of 10 digits. Please leave first three colum

Section - A

प्रश्नोत्तर क्रमांक :- 1 (a)

सल्तनत काल में स्त्रियों की स्थिति -

सल्तनत काल में समाज का ढाँचा सामंती हो चुका था इस काल में स्त्रियों की दशा को इसी सामंती संदर्भ में प्रदर्शित किया जाता रहा है परंतु यह भी देखना आवश्यक है कि केवल कुछ महिलाएं ही पर्दे के आगे आकर राजनीति में अपने कदम रख सकीं उदा० के लिए रजिया सुल्तान को इस श्रेणी में रखा जाता है।

रजिया सुल्तान का राजनीतिक नेतृत्व सामाजिक नीतियों को एक नयी दिशा प्रदान करने वाला कदम रहा उदाहरणार्थ उसने अपने भाई बहराम शाह के द्वारा किए जा रहे कुकृत्यों पर रोक लगाई। इसके अलावा महिलाओं की स्थिति को निम्न संदर्भ में देख सकते हैं-

कुलीन वर्ग बनाम निम्न वर्ग में महिलाएं-

कुलीन वर्ग की महिलाएं मुख्यतः राज-ठाठ के पृष्ठभूमि में रही थीं तथा इनकी अधिकतर संख्या मुस्लिम महिलाएं थीं जबकि निम्नवर्ग की महिलाएं, जिन्हें दासी के रूप में भी रखा जाता था, कठोर तथा जटिल जीवन जी रही थी। [illegible] अतिरिक्त इनके पास संसाधनों की [illegible] उपलब्धता का अभाव रहा था।

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code A 0 5 0 5 0 3 T

हिंदू बनाम मुस्लिम महिलाएं-

मुस्लिम महिलाएं मुख्यतः शासक वर्ग से थी जिन्हें राजनीति में भी आने का अधिकार होता जबकि हिंदू वर्ग की महिलाएं पर्दे के पीछे से ही कार्य करती रहीं तथा देवदासी प्रथा जैसे प्रथाओं एवं कुंठा भरा जीवन जीती रहीं।

इस प्रकार इन महिलाओं ने सल्तनत कालीन दशाओं को ग्रहण किया तथा अपनी जटिल परिस्थितियों तथा कुंठित जीवन में अपने जीवन को आगे बढ़ाती रहीं।

प्रश्नोत्तर क्रमांक :- 1(b)

खिलजी क्रांति-

गुलाम वंश के अंतिम शासक कैकुबाद की हत्या के पश्चात जलालुद्दीन खिलजी ने सुल्तान का पद धारण किया। यह कोई सामान्य घटना नहीं थी क्योंकि दासों और उत्तराधिकारियों के पश्चात तथा एक अमीर वर्ग के शासन के पश्चात निम्न वर्गीय जातियों का शासक दिल्ली की गद्दी पर बैठा था। इसने न केवल मुस्लिमों को आगे बढ़ाया बल्कि गैर मुस्लिमों को भी आगे बढ़ने के पूर्ण व सतत प्रयास करता रहा। इसे खिलजी क्रांति निम्न कारणों से भी कहा जाता है-

A 0 5 0 5 0 3 T

निम्न वर्ग के लोगों का अमीर वर्ग में आना -

जलालुद्दीन खिलजी तथा पश्चात में अलाउद्दीन खिलजी ने भी अमीर वर्ग का विस्तार किया और उसमें मुस्लिमों के अलावा गैर मुस्लिमों को भी स्थान प्रदान किया।

उलेमा वर्ग का नीतिगत दमन -

उलेमाओं को इन शासकों ने अपनी नीतियों से दबाने का प्रयास किया। फिर यही नहीं अलाउद्दीन खिलजी ने तो उलेमा वर्ग को पृथक ही कर दिया राजनीति से। उसने यह भी कहा था कि "मैं यह नहीं जानता कि क्या धर्म सम्मत है और क्या नहीं"

इस प्रकार उलेमा वर्ग के दमन तथा निम्न वर्ग को राजनीति में शामिल करके खिलजी शासकों ने न केवल सामाजिक आधार का विस्तार किया बल्कि इसके विरासत को आगे के शासकों ने भी। अलाउद्दीन खिलजी का धर्म और राजनीति में पृथक्करण करना उसके सामाजिक दायित्व की ओर इशारा करता है।

परंतु यह बात आंकलन नहीं हो सकती दमन पूर्व की ही तरह चलता रहा।

Do Not Write anything in this Portion

प्रश्नोत्तर क्रमांक :- 1 (c)

अलाउद्दीन खिलजी का राजत्व का सिद्धांत :-

अलाउद्दीन खिलजी ने 1296 में अपने ससुर जलालुद्दीन खिलजी की हत्या कर अपने को सुल्तान घोषित किया तथा अपने अधीन कई शासकों को रखा। यथा उसके शासन काल में सबसे ऊपर सुल्तान का पद होता था तथा फिर उसके अधीन वजीर तथा अन्य पद होते थे। सुल्तान खलीफा से खिल्लत प्राप्त करता था तथा इसके नाम से मस्जिदों में खुतबा पढ़ा जाता था। इसके राजत्व में निम्नलिखित प्रशासनिक अधिकारी होते थे -

सुल्तान
↓
मजलिस - ए - खलवत (मंत्रीपरिषद)
↓
केंद्रीय प्रशासन
↓
दीवान - ए - वि[illegible] | दीवान - ए - आरिज | दीवान - ए - रिसालत | दीवान - ए - इंशा
↓
प्रांतीय प्रशासन → इक्ता व्यवस्था के तहत मुक्ती / वली
↓

शिक (शिकदार)

↓

परगना (आमिल)

↓

ग्राम

इस प्रकार अलाउद्दीन खिलजी ने अपने राजत्व के सिद्धांत द्वारा सल्तनत काल में प्रशासन व्यवस्था तथा राजनीतिक विस्तार का साम्राज्यवादी मार्ग चुना।

प्रश्नोत्तर क्रमांक :- 1 (d)

मीराबाई

मीराबाई भक्ति आंदोलन की एक ऐसी महिला सुधारक थी जिन्होंने तत्कालीन समाज में क्रांति [illegible] दी थी। इन्होंने दक्षिण से रामानंद द्वारा लायी गयी भक्ति में कृष्णभक्ति का वह अंश सम्मिलित किया जिसे तत्कालीन समाज की महिलाओं से अपेक्षित था।

मीराबाई राणा रतन सिंह की पुत्री थी जो कि विवाह नहीं करना चाहती थी परंतु इनका विवाह प्रतिष्ठित राजा भोज के साथ करवा दिया गया। इनके विवाह के पश्चात पति के कहे जाने पर भी इन्होंने भक्ति मार्ग को नहीं त्यागा और आध्यात्म के पथ पर आगे चलती रहीं। इनके द्वारा

Paper Code A 0 5 0 5 0 3 7 06

कुछ रचनाएं भी की गई। जो आज भी हिंदी साहित्य में अपनी अहम भूमिका निभाती हैं उदा॰ के लिए –
① नरसी जी का मायरा
② गीत गोविंद का टीका
③ राग गोविंद

इसके अतिरिक्त मीराबाई को इनके द्वारा फैलाए गए विचारों के द्वारा भी जाना जाता है उदाहरणार्थ इन्होंने निम्न प्रकार से सामाजिक क्रांति उत्पन्न कर दी –

① लोगों में आध्यात्मिक चेतना जागृत की
② महिलाओं को आगे आने में सहायता
③ एक आदर्श महिला के रूप में समाज को शिक्षा दी।
④ हिंदी साहित्य आज भी इनका गुणगान करता है।

इस प्रकार मीराबाई को न केवल महिला के रूप में माना जाना चाहिए बल्कि ये समकालीन रामानंद, कबीर, तुकाराम आदि सुधारकों के समान अपनी अहम भूमिका निभाती हैं।

प्रश्नोत्तर क्रमांक:- 1 (e)

बरकारी आंदोलन:-

बरकारी आंदोलन सूफी आंदोलनों की श्रेणी में रखा जाने वाला अहम आंदोलन था जिसे बरकरी संप्रदाय द्वारा चलाया गया तथा इसने सामाजिक कुप्रथाओं एवं रूढ़िवादिता पर चोट करते हुए सामाजिक स्थिति को सुधारने का पूर्णतः प्रयत्न किया। इन्होंने निम्न कदमों को उठाकर अपनी स्थिति इन आंदोलनों की श्रेणी में अपना स्थान बनाया -

① रूढ़िवादिता एवं पाखण्ड विरोध - इन्होंने अपति इन आंदोलनकारियों ने समाज में व्याप्त पाखण्ड एवं कर्मकाण्ड पर चोट की जिससे महिलाओं की स्थिति सुधारी जा सके।

② मूर्ति पूजा का खण्डन - बरकारी संप्रदाय आरंभ से ही मूर्ति पूजा का विरोध करता रहा है तथा प्रेम भावना पर बल देता रहा है।

③ रहस्यवाद पर जोर - रहस्यवाद मुख्यतः एक अदृश्य परम आलम्बन की ओर मनुष्य के प्रेम का वर्णन करता है इस आंदोलन ने था विशेषा संप्रदाय ने इस पर जोर दिया।

Paper Code A 0 5 0 5 0 3 7

एकता पर बल → वहदत - उल - वजूद के

एकत्व के नारे के साथ यह संप्रदाय समाज में होने वाले विभाजन को भी रोकने में लगभग सफल रहा।

इस प्रकार सरकारी आंदोलन भक्ति तथा सूफी आंदोलन के माध्यम से सामाजिक कुरीतियों को दबाने में सक्षम हुआ।

प्रश्नोत्तर क्रमांक :- 1(f)

नूरजहाँ जुंटा

जुंटा से आशय एक ऐसे समुदाय से है ~~जिसमें~~ जिसमें कुछ लोग मिलकर एक समूह बनाकर शासन - प्रशासन तथा राजनीति को चलाते हैं।

कुछ इसी प्रकार का दृश्य नूरजहाँ जुंटा में दिखाई देता है इसमें नूरजहाँ, जहाँगीर का पुत्र शाहजहाँ, आसफ खान तथा नूरजहाँ का पिता मिर्जा ग्यास बेग ने मिलकर एक समूह बनाया और इस जुंटा से जहाँगीर की राजनीति में हस्तक्षेप किया तथा विदेश नीति को भी अपने हाथों में ले लिया।

Do Not Write anything in this Portion

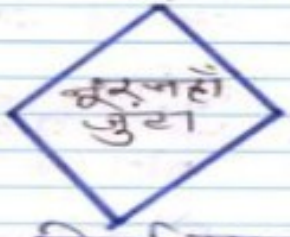

इस जुंटा ने जहाँगीर द्वारा भेजे गये अभियानों में सैनिक ~~प~~ परिचालन तथा उनकी अधिकारियों को स्थिति को भी निर्धारित करना आरंभ कर दिया। इस प्रकार यह जुंटा जहाँगीर के शासनकाल में इसकी नीतियों तथा शासन को परिचालन स्वयं करता रहा।

अतएव नूरजहाँ की सोच तत्कालीन मुगल महिलाओं की स्थिति में राजनीतिक ~~प~~ परिदृश्य वाली दिखायी देती है।

प्रश्नोत्तर क्रमांक:- 1 (a)

मुगल काल में बैंकिंग व्यवस्था

मुगल काल में बैंकिंग व्यवस्था आधुनिक बैंकिंग व्यवस्था की तरह तो नहीं दिखाई देती परंतु फिर भी इनमें स्थानीय स्तर पर बैंकिंग प्रणाली का स्वरूप दिखाई पड़ता है जिन्हें

Do Not Write anything in this Portion

निम्न प्रकार से समझ सकते हैं -

① सर्राफा व्यापारी तथा साहूकार - बैंकिंग व्यवस्था में प्राथमिक भूमिका इन साहूकारों की ही होती थी जो आवश्यकता प्राप्त करने वाले व्यक्ति को धन की उपलब्धता कराते थे।

② ऋणों में दरों का निर्धारण - ऋण दिए जाने पर ये बैंकर्स या साहूकार उसकी दर दीर्घकालीन ऋण के लिए 20% जबकि अल्पकालीन ऋण के लिए 10% तक निर्धारित करते थे।

③ हुण्डी व्यवस्था - हुण्डी मुख्यतः विनिमय पत्र की भूमिका निभाती थी। प्रायः व्यापारी अपना धन साहूकारों को देकर इनसे ये पत्र प्राप्त कर लेते थे और आवश्यक स्थान पर इसका प्रयोग सांकेतिक मुद्रा के रूप में करते थे।

④ लेखा - प्रणाली - इस काल में विभिन्न अधिकारियों के द्वारा साहूकारों द्वारा दिये जाने वाले ऋणों का लेखा-जोखा भी रखा जाता था।

⑤ मुद्रा - विनिमय - मुद्रा प्रणाली में विनिमय का माध्यम तत्कालीन दाम, रुपया तथा मुहर चलती थी।

इस प्रकार मुगलकालीन बैंकिंग प्रणाली तत्कालीन आर्थिक सहायक थी।

प्रश्नोत्तर क्रमांक :- 1(६)

मुगलकालीन मुद्रा प्रणाली :-

मुगलकाल में मुद्राओं का प्रचलन बढ़ गया था क्योंकि इस काल में राजस्व मुख्यतः नकद के रूप में लिया जाने लगा था तथा नकदी फसलों के प्रचलन ने इसे और बल प्रदान किया। मुगलकाल के सिक्के निम्न 3 धातुओं के बने होते थे।

सोना → मुहर / दिरहम
चांदी → रूपया
तांबा → दाम

मुगलकालीन यह मुद्रा व्यापारी वर्ग के विनिमय के कार्य भी आती थी। इसकी विशेषताएं निम्न लिखित है -

① मुद्रा के अत्यधिक प्रयोग ने नगरीकरण को प्रोत्साहन दिया।

② मुद्रा का प्रचलन फसलों की नकदीकरण की ओर भी संकेत करता है।

③ मुद्रा के अत्यधिक प्रयोग द्वारा शासकों द्वारा

Do Not Write anything in this Portion

राजस्व लिया जाना अत्यधिक आसान हो गया

(4) मुद्रा प्रणाली में सिक्कों का भार उस शासक की मजबूती तथा स्थिति को दर्शाता है।

(5) मुद्रा पर छपी हुई मूर्तियाँ उस काल के साहित्य - संस्कृति एवं कला की ओर प्रेम को दर्शाती हैं।

इस प्रकार मुगलकाल की मुद्रा प्रणाली तत्कालीन शासकों की स्थिति - दशा - कला प्रेम - साहित्य रुचि को प्रदर्शित करती है तथा उस समाज की आर्थिकी को परिलक्षित करती है।

प्रश्नोत्तर क्रमांक:- 11(i)

शेरशाह की मुद्रा प्रणाली: मुगलों की अग्रगामी :-

मुगलकाल में एक अफगान शासन की सुल्तानों की कड़ी में स्थापक जुड़ जाना अपने में की बात थी। शाहजहाँ, एक अफगानी, न केवल अपनी राजनीतिक स्थिति एवं नीतियों के लिए जाना जाता है बल्कि उसके द्वारा किए गए व्यापक आर्थिक प्रयास एवं राजस्व सुधार तथा मुद्रा प्रणाली

का विकसित प्रयोग उस काल में एक नई बात थी उसके द्वारा चलाया गया चाँदी का रुपया तथा तांबे का दाम मुगलकालीन अर्थव्यवस्था में एक नई आर्थिक विचारधारा को ला देता है शेरशाह द्वारा इस प्रकार की मुद्राओं का प्रयोग करना मुगल काल के समाज को भी दर्शाती है। चूंकि सल्तनत काल में मुद्राएँ अधिक विकसित नहीं थी इसलिए शेरशाह की मुद्राएँ मुगलकाल की अग्रगामी नीति प्रदर्शित करती हैं। इसके द्वारा मुद्राओं का वजन भी निश्चित रखा गया।

मुद्राओं का आकार – प्रायः आरंभ में मुद्राओं का आकार चौकोर ही था परंतु बढ़ती नवीन विचारधारा के क्रम इसकी कुछ मुद्राएं गोल भी दिखाई देती हैं।

मुद्राओं का वज़न – मुद्राओं का वजन उस शासक की स्थिति व कूटनीतिक चतुरता को दर्शाता है। इसी संदर्भ में शेरशाह का चाँदी का रुपया लगभग 72 ग्रेन का था।

मुद्रा : विनिमय का माध्यम – शेरशाह की ये मुद्राएं नगरीकरण में वृद्धि के साथ - साथ व्यापारियों के विनिमय में सहयोग देती है।

इस प्रकार शेरशाह की मुद्रा प्रणाली मुगलों की अग्रगामी रही।

Section-'B'

प्रश्नोत्तर क्रमांक:- 2

अलाउद्दीन खिलजी : आर्थिक नीति एवं बाजार नियंत्रण नीति

अलाउद्दीन खिलजी द्वारा आर्थिक दिशा में जो सुधार किए गए थे वह न तो सल्तनत के पूर्व के शासकों, सल्तनतकाल के अलाउद्दीन के पूर्व के शासकों के द्वारा किए गए और न ही किसी प्रांतीय अधिकारी द्वारा ऐसा कोई कदम उठाया। अलाउद्दीन खिलजी ने अपनी आर्थिक नीति में सुधार के क्रम में न केवल भू राजस्व सुधार की ओर कदम बढ़ाया बल्कि उसने अपनी बाजार नियंत्रण नीति के भी माध्यम से खिलजी क्रांति में योगदान दिया। उसके द्वारा उठाए गए आर्थिक कदम सल्तनकाल में एक नवीन आर्थिक प्रयोग थे क्योंकि अलाउद्दीन खिलजी ने इस तरह भू राजस्व सुधार किए जिससे मद्दयस्त एवं बिचौलियों को ही समाप्त नहीं किया बल्कि भू राजस्व की दर को बढ़ाकर लोगों (सल्तनतकालीन हिंदू एवं मुस्लिम) में स्थिति में बदलाव लाया। इसकी भू राजस्व नीति निम्न प्रकार से समझी जा सकती है -

आर्थिक नीति : भू राजस्व सुधार

अलाउद्दीन खिलजी ने भूमि के राजस्व को तीव्र दर से वसूलने का प्रयास किया जिसके लिए उसने निम्न कदम उठाए-

① भू राजस्व में वृद्धि - प्राय: पूर्व के शासकों द्वारा भू राजस्व 1/3 लिया जाता था परंतु अलाउद्दीन खिलजी ने इसे बढ़ाकर 1/2 या 50% तक ला दिया जिस कारण लोगों में असंतोष बढ़ा।

② भूमि की माप - भू राजस्व निर्धारित करने से पूर्व अलाउद्दीन खिलजी द्वारा लागू नियम के अनुसार भूमि की माप कराई जाती थी जिसे मसाहत पद्धति के नाम से जाना जाता है। इस कदम ने राजस्व वृद्धि में तीव्रता लायी।

③ भू राजस्व संग्रहण - अलाउद्दीन द्वारा इक्ता व्यवस्था के तहत प्रांतीय स्तर पर जबकि शिक एवं परगना के स्तर पर शिकदार एवं आमिल के द्वारा राजस्व की वसूली करवायी जाती थी।

④ मध्यस्थ एवं बिचौलियों का अंत:- राय, राणा, रावत, ठाकुर आदि जैसे जमींदार राजस्व वसूली में एक बृहत हिस्सा स्वयं ले जाते थे जिस कारण केंद्रीय खजाने में दिन-प्रतिदिन कमी आ रही थी

जिसके चलते अलाउद्दीन खिलजी ने इस वर्ग का ही अंत कर दिया।

इस तरह अलाउद्दीन खिलजी द्वारा उठाए गए भू राजस्व सुधार के कदम उसकी मजबूत आर्थिक नीति की झलक देते हैं।

फिर यही नहीं उसकी बाजार नियंत्रण व्यवस्था भी मुगल काल में अपनी आर्थिक नीति की तरह कार्यरत रही इसे निम्नलिखित रूप में देखा जा सकता है-

आर्थिक नीति: बाजार नियंत्रण

अलाउद्दीन खिलजी द्वारा उठाया गया यह कदम एक तत्कालीन क्रांतिकारी विचार था क्योंकि बाजार में व्याप्त भ्रष्टाचार एवं जमाखोरी तथा कालाबाजारी केंद्रीय व्यवस्था में कमी ला रही थी जिस कारण इसके द्वारा यह कदम उठाया गया।

उद्देश्य :- बरनी के अनुसार, अलाउद्दीन खिलजी के द्वारा उठाया गया बाजार नियंत्रण रूपी कदम कोई जनकल्याण एवं सामाजिक सुधार से प्रेरित नहीं था बल्कि यह स्थायी सेना के गठन का एक प्रतीकात्मक प्रयास है जिसके द्वारा बाह्य मंगोल आक्रमण से बचा जा सके।

Paper Code A 0 5 0 5 0 3 7

उठाए गए कदम - अलाउद्दीन खिलजी ने बाजार नियंत्रण के क्रम में निम्न कदम उठाए -

① कीमतों का निर्धारण :- इसने बाजार में वस्तुओं की कीमतों को सस्ती दरों पर निर्धारित कर दिया तथा उसकी राशि में वृद्धि एक अपराध घोषित कर दिया।

② कीमतों में परिवर्तन : अपराध :- अलाउद्दीन खिलजी के द्वारा उठाए गए कदम में यदि कोई विक्रेता कीमतें बदलता या माल में कमी करता तो उसको एक गंभीर अपराधी की श्रेणी में रखा जाता था।

③ बाजारों का वर्गीकरण :-
→ अनाजों का बाजार
→ कपड़ों का बाजार (सरा-ए-अदल)
→ पशुओं एवं मवेशियों का बाजार

अलाउद्दीन खिलजी ने उपर्युक्त तीन भागों में वर्गीकरण करके बाजार में कीमतों में स्थिरता लाने का प्रयास किया।

④ शहना-ए-मण्डी अधिकारी :- इन बाजारों के नियंत्रण के लिए अलाउद्दीन ने शहना-ए-मण्डी नामक अधिकारी की नियुक्ति की जिसने बाजार

Do Not Write anything in this Portion

में कठोरता का अनुपालन किया एवं इसे अलाउद्दीन खिलजी के बाजार नियमों के अनुसार चलाया।

⑤ आपातकालीन सुरक्षा → अलाउद्दीन की बाजार नियंत्रण नीति में आपातकालीन सुरक्षा विद्यमान थी। क्योंकि उसने राजस्व के रूप में अनाजों को लेकर एक बफर स्टॉक तैयार किया था जिसका प्रयोग सूखा या अकाल में होता था।

सीमाएं -

अलाउद्दीन खिलजी की बाजार नियंत्रण की नीति निम्न सीमाओं से घिरी रही -

① अधिकारियों द्वारा गलत भूमि की माप करने से असंतोष।

② भ्रष्टाचार अभी भी अधिकारियों द्वारा किया जाता रहा।

③ ... में परिवर्तन करके विक्रेता गुप्त रूप से धन अर्जन करते रहे।

इस प्रकार यदि यह नीति सफल होती तो इसे अच्छी नीति घोषित किया जा सकता परंतु यह असफल रही।

अलाउद्दीन खिलजी ने इस प्रकार अपनी आर्थिक नीतियों के द्वारा सल्तनत कालीन अर्थव्यवस्था में अपना योगदान दिया।

Section:-C
प्रश्नोत्तर क्रमांक:- 7

मुगल भू राजस्व प्रणाली:-

सल्तनतकाल के विपरीत मुगल काल में भू राजस्व एक नवीन दिशा की ओर मुड़ा था जहाँ सल्तनतकालीन शासक केवल भूमि से राजस्व वसूली के क्रम में राजस्व वृद्धि तक ही सीमित रहे वहीं मुगलकाल में भू राजस्व वसूली के क्रम में तथा भूमि वर्गीकरण के माध्यम से वसूला जाने लगा।

बाबर ~~जहाँगीर~~ हुमायूं का काल -

बाबर और जहांगीर के काल में भूराजस्व सुधार में कोई नवीन प्रणाली नहीं देखने को मिलती है हालांकि बाबर द्वारा कृषि सुधार के क्रम में प्रयास किए गए थे परंतु वह भारत में अधिक सक्रिय न रहने के कारण इस ओर ध्यान नहीं दे सका। वहीं हुमायूं तो सारी जिंदगी राजनीति के चंगुल में ही फँसा रहा। वस्तुतः वास्तविक सुधार शेरशाह तथा अकबर द्वारा किए गए जिसने भू-राजस्व प्रणाली को एक क्रांतिकारी चमक प्रदान की इसे निम्न रूप में देख सकते हैं।

Do Not Write anything in this Portion

शेरशाह की प्रणाली -

जब्ती प्रणाली :

जब्ती प्रणाली मुख्यत: शेरशाह द्वारा आरम्भ की गई । जिसके तहत उसने निम्न कदम उठाए -

① **गज - ए - सिकंदरी का प्रयोग** - भूमि की माप के संदर्भ में शेरशाह द्वारा गज - ए - सिकंदरी का प्रयोग किया गया था । जिसके द्वारा शेरशाह अधिक और नियमित राजस्व वसूली कर सके ।

② **भूमि का वर्गीकरण** - मुगलकाल की यह एक नवीन प्रणाली थी शेरशाह ने यह मुख्यत: निम्न प्रकार से विभाजित की थी -

उत्पादकता के आधार पर:
- → उत्तम → अधिक राजस्व दर
- → मध्यम → कम राजस्व दर
- → निम्न → बहुत कम राजस्व दर

③ महत्त्व | बिचौलिए - अलाउद्दीन खिलजी से सीख लेकर शेरशाह ने महत्त्व एवं बिचौलियों को स्थानीय स्तर पर बने रहने दिया ताकि विद्रोह एवं असंतोष को दबाया जा सके ।

(4) <u>भू राजस्व की वसूली</u> – भू राजस्व की वसूली के लिए शेरशाह ने अधिकारियों की नियुक्ति की थी जहां मनसबदार और जागीरदार प्रमुख अधिकारी के रूप में थे।

इस प्रकार शेरशाह ने अपनी भू राजस्व की नीति के माध्यम से मुगलकालीन आरम्भिक अर्थव्यवस्था के सुधार में काम रखा।

अकबर की प्रणाली :- आइन-ए-दहसाला

मुगलकाल में अकबर द्वारा प्रयोग में लायी गयी भू राजस्व प्रणाली सबसे बेहतर मानी जाती है इसे निम्न रूप में देख सकते हैं –

<u>भूमि का मापन</u> – अकबर द्वारा इलाही गज का प्रयोग किया जिसकी माप 33 इंच और 41 अंगुल की थी। इस माप द्वारा राजस्व वसूली और आसान हो गयी।

<u>भूमि का वर्गीकरण</u> – भूमि का वर्गीकरण करने में अकबर की 2 प्रकार के आधार प्राप्त होते हैं –

बारंबारता के आधार पर →
- पोलज
- परती
- चाचर
- बंजर

Paper Code A 0 5 0 5 0 3 7

Do Not Write anything in this Portion

उत्पादकता के आधार पर → उत्तम, मध्यम, निम्न

इस प्रकार भूमि वर्गीकरण के द्वारा अकबर भू राजस्व को प्रयोग में लाता रहा।

भू राजस्व का निर्धारण - भू राजस्व के निर्धारण के लिए अकबर द्वारा दर तालिका का प्रयोग किया गया जिसके पिछले 10 साल के रिकार्ड के आधार पर भू-राजस्व निर्धारित किया जाता था।

भूराजस्व का नकदी में परिवर्तन - भू राजस्व को नकदी में परिवर्तन करने के लिए अकबर द्वारा दस्तूरों का निर्माण किया गया था

भू राजस्व की वसूली :- अकबर द्वारा भू राजस्व की वसूली के क्रम में दस्तूर-उल-अमल जारी किया जाता था जिसके निर्देशों का पालन विभिन्न अधिकारियों द्वारा किया जाता था।

इस प्रकार अकबर ने अपनी राजस्व प्रणाली के माध्यम से एक उत्तम भू राजस्व व्यवस्था प्रस्तुत की। जिसको आगे के काल में रूढ़िवादिता के ग्रस्त होने का खतरा बना रहा।

अकबर के पश्चात:-

अकबर के पश्चात क्रमशः जहाँगीर, शाहजहाँ के काल में तो भू राजस्व सुधार लगभग चलते रहे परंतु औरंगजेब के काल तक आते - आते इन सुधारों में गिरावट आने लगी क्योंकि औरंगजेब का मानना था कि राजस्व दर अधिक हो तथा तुरंत निर्धारण कर वसूली जाए।

इस प्रकार मुगलकालीन अर्थव्यवस्था में भू राजस्व प्रणाली का अपना अहम स्थान रहा। जिसका कुछ हद तक प्रयोग भविष्य में आने वाली ब्रिटिश, डच, पुर्तगीज, फ्रांस आदि कंपनियां भी करती रहीं।

Do Not Write anything in this Portion